International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 379-380

प्रेमचन्द के कथा साहित्य में लोक चेतना

डॉ0 जयराम त्रिपाठी

सहा0 प्रोफेसर (हिन्दी), हेमवती नंदन बहु0 राज0 स्नातको0 महा0, नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रेमचन्द का कथा साहित्य अत्यन्त विशाल है 'पंच परमेश्वर' से प्रारम्भ यात्रा का समापन 'कफन' में होता है। इस सम्पूर्ण यात्रा के दोनों बिन्दुओं पर ध्यान देने से यह स्पष्ट हो जाता है कि जो व्यक्ति पंच परमेश्वर के उच्च आदर्शों को लेकर अपना साहित्य प्रारम्भ करता है वह कफन जैसे नग्न यथार्थ का चित्रण कैसे कर पाया होगा। उपन्यासों में गोदान तक आते–आते बहुत कुछ 'कफन' की विचाराधारा पुष्ट हो जाती है।

मूल शब्द : प्रेमचन्द, उपन्यास, कहानी एवं लोकचेतना

प्रस्तावना

साहित्य सृजन का उद्देश्य सभी कवि–लेखकों का भिन्न–भिन्न होता है अपने निबन्ध 'साहित्य का उद्देश्य' में प्रेमचन्द ने लिखा है, ''साहित्यकार का उद्देश्य केवल महफिल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है–उसका दरजा इतना न गिराइये। वह देश भक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सचाई है।''[1] प्रेमचन्द ने यह सिद्ध करने का प्रयाय किया कि साहित्य का उद्देश्य लोक में चेतना और जागृति उत्पन्न कर लोक मंगल की भावना का विकास करना है।

प्रेमचन्द का भाषा पर पूरा अधिकार है, मनुष्य हृदय की अनुभूतियों को व्यक्त करती हुई युगानुकूल भाषा का उन्होंने अपने साहित्य में प्रयोग किया है। कथानक के अनुसार ही इनकी भाषा में पात्रों के स्तर के अनुरूप वे परिवर्तन करते चलते हैं, लोक जीवन से जुड़े हुए पात्र लोक में प्रयुक्त भाषा का ही प्रयोग करते हैं। प्रेमचन्द की कहानियाँ और उपन्यास घटना बाहुल्य हैं उनमें घटनाओं का ढेर इस क्रम से उपस्थित होता चलता है कि पाठक चमत्कृत हो जाता है। प्रेमचन्द का बचपन अत्यन्त संघर्षपूर्ण था, इस संघर्ष का उनके साहित्य में सर्वत्र योगदान दिखाई पड़ता है। प्रेमचन्द ने अपना लेखन उर्दू में प्रारंभ किया और शुरुआत में वह उर्दू में लिखकर फिर हिन्दी में अनूदित करते थे, इसीलिए उनकी भाषा में सर्वत्र उर्दू की शब्दावली दिखाई पड़ती है उर्दू पत्र 'शाहकार' (लाहौर) में उन्होंने उर्दू छोड़कर हिन्दी में लिखने का कारण स्पष्ट करते हुए लिखा है ''मैं हिन्दी में इसलिए नहीं कहने (लिखने) लगा कि हिन्दी वालों ने मुझ पर सोने की थैलियाँ निसार कर दीं, बल्कि इसलिए कि हर एक अदीब की तमन्न होती है कि उसकी तसानीफ ज्यादा से ज्यादा हाथों में पहुँचे।''

कथावस्तु किसी भी रचना का प्राण होती है प्रेमचन्द अपनी रचनाओं का कथानक समाज के मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग से ग्रहण करते हैं, क्योंकि जीवन में संघर्ष इसी वर्ग में सर्वाधिक दिखाई पड़ता है। उनकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृति 'गोदान' के कथानक पर ध्यान देते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि उसकी आधिकारिक कथा गांव से सम्बद्ध है जबकि नगर की कथा प्रासंगिक रुप में हैं। कथाओं की संयोजकता इतनी स्वाभाविक है और घटनाओं का संघटन इतना संयत और अवसरानुकूल है कि पाठक स्वयं इसका पात्र हो कर इसमें समा जाता है और सम्पूर्ण घटनाक्रम को तटस्थ भाव से देखने पर विवश हो जाता है। प्रेमचन्द के विवेचन की विविधता को दृष्टिगत रखते हुए नन्द दुलारे वाजपेयी ने कहा है '' प्रेमचन्द की कहानियाँ संख्या में तीन सौ के लगभग हैं। इसके अतिरिक्त उनकी उर्दू कहानियों की संख्या भी सौ के ऊपर है। ये सारी कहानियाँ लम्बे समय के अंतर्गत लिखी गई है, इस कारण इनमें कलात्मक विकास की कई भूमियों का दिखाई देना स्वाभाविक है।'' कथा साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि कथानक और चित्रित परिस्थितियों के वर्णन में प्रेमचन्द उत्तरोत्तर परिपक्व होते गये।

प्रेमचन्द अपने सम्पूर्ण साहित्य में 'आदर्शवादी विचारधारा से प्रेरित हैं, इनकी विचारधारा को विद्वानों ने आदर्शोन्मुख–यथार्थवाद कहा है, उनका उद्देश्य भारतीय ग्रामीण समाज में व्याप्त विद्रूपताओं को उद्घाटित कर समाज की परिस्थितियों को सकारात्मक बदलाव की तरफ अग्रसर करना था। सन् 1936 में स्थापित प्रगतिशील लेखक संघ के पहले अध्यक्ष मुंशी प्रेमचन्द प्रगतिशील विचारों के समर्थक और सर्वहारा के विकासदर्शी थे।

लोक चेतना से अनुप्राणित रचयिता समाज की तत्कालीन परिस्थितियों से गहरे प्रभावित होता है। प्रेमचन्द के लेखन का समय राष्ट्रीय आंदोलन का संघर्षपूर्ण समय था। प्रेमचन्द जैसा क्रांतिकारी लेखक भला कैसे इन परिस्थितियों से अछूता रहता उनका प्रारंभिक कहानी संग्रह 'सोजे वतन' उस समय की सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था। सामाजिक आंदोलन का राष्ट्रीयता का नाम दिया जाता है। जो इस आंदोलन को जितना ही साथ देता है वह उतना ही राष्ट्रीय है। विचार करते हुए मधुरेश ने लिखा है ''भारतीय ग्राम्य जीवन का अंकन प्रेमचन्द के लिए आंदोलन या नारा नहीं था। प्रेमचन्द इस बात

को अच्छी तरह समझते थे कि अपनी सारी सादगी, सहजता और स्वेच्छा के बावजूद ध्वंसप्राय सामंती व्यवस्था और नवागत पूँजीवाद के दोहरे दबाव के फलस्वरूप भारतीय किसान की नियति को बदल पाने के लिए एक महत और निर्णायक संघर्ष अपेक्षित है।''

जिस प्रकार हम किसी चित्रकार की पूर्णता चित्र में सभी रंगों के समायोजन के रूप में देखते हैं उसी प्रकार प्रेमचन्द ने भारतीय समाज के विविध पक्षों का वर्णन अपनी रचनाओं में किया है, उन्होनें दर्शाया कि ग्रामीण परिवेश में सरलता है, दुःख है, अज्ञानता है और अभावजनित अंधकार व्याप्त है वहीं नगर में संपन्नता है, कुटिलता है, सुख है, सभ्यता का दिखावा है और किताबी सैद्धांतिक ज्ञान के प्रकाश का आडम्बर है। इस प्रकार के दोहरे चरित्र अंकित कर प्रेमचन्द विषमता को मिटाना चाहते थे यही कारण है कि वह गोबर को शहर से अनुभव प्राप्त करा कर उसे अन्याय एवं शोषण के विरुद्ध खड़ा करते हैं। समाज की समस्याओं का समाधान इस ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के सामंजस्य में ही है।

प्रेमचन्द ने साहित्य की कसौटी उपयोगिता को बनाया था, वह साहित्य एवं राजनीति दोनों को उन्नति के साधन के रुप में देखते है उनका मानना था कि साहित्य और राजनीति के सम्मिलित प्रयास से समाज का विकास एवं मानव कल्याण हो सकता है। विजयेन्द्र स्नातक ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं ''वे एक नई दृष्टि लेकर आए, उन्होनें उपन्यास की भारतेन्दु युगीन कौतूहल वृत्ति का त्याग कर दैनन्दिन जीवन की घटनाएँ तथा क्रियाकलाप को सहज सरल भाषा मे प्रस्तुत किया। प्रेमचन्द ने साहित्य को मूलतः जीवन की आलोचना माना है अतः अपने कथा साहित्य में सामाजिक जीवन तथा समसामयिक जीवन में गहरे पैठकर उसकी प्रवृत्ति को समझा और पाठक के सम्मुख उस पूरे सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन को प्रस्तुत किया।'' साहित्य का लक्ष्य लोकमंगल मानकर लिखने वाले रचनाकार ही साहित्य के इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित करने में सफल हुए हैं। रीतिकालीन विचारधारा तो साहित्यिकों के मध्य भी अपना स्थान नहीं सुरक्षित रख पाती है।

जाफर रज़ा ने प्रेमचन्द के साहित्य के महत्व को प्रकट करते हुए लिखा है '' प्रेमचन्द ने राष्ट्रीय समस्याओं पर विचारोत्तेजक मंतव्य प्रस्तुत किये थे, जिससे उनकी सार्वभौमिक प्रतिभा का अनुभव होता है। प्रेमचन्द हिन्दी उर्दू के लेखक एवं कथाकार ही नहीं वरन् डिकेंस, थैकरे, तालस्ताय और गोर्की के समान अंतराष्ट्रीय साहित्यकार हैं। उनके लेख में मानव हृदय की धड़कनें हैं वे अतीत या वर्तमान के ही नहीं भविष्य के भी साहित्यकार हैं।''

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रेमचन्द : साहित्य का उद्देश्य (हंस प्रकाशन–अप्रैल–2015). 2015, 22ण
2. प्रेमचन्द : उज्रे–तक़सीर (शाहकार, मई–1936)
3. नन्ददुलारे वाजपेयी : प्रेमचन्द एक साहित्यिक विवचेन (राजकमल प्रकाशन–2003). 2003, 96.
4. मधुरेश–हिन्दी कहानी का विकास (लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद–2008). 2008, 33.
5. विजयेन्द्र स्नातक : हिन्दी साहित्य का इतिहास (साहित्य अकादमी–2009). 2009, 288-89.
6. जाफर रजा : कथाकार प्रेमचन्द (लोक–भारती प्रकाशन–2014). 2014, 287.